विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ **दिनांक -03-01-2021**

विषय -हिन्दी (व्याकरण) **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ नववर्ष की।

अनुस्वार – अं-(ां) वर्ण भी स्वरों के बाद ही आता है। इसका उच्चारण नाक से किया जाता है। इसका उच्चारण जिस वर्ण के बाद होता है, उसी वर्ण के सिर पर (ां) बिंदी के रूप में इसे लगाया जाता है; जैसे-रंग, जंगल, संग, तिरंगा आदि।

अनुनासिक – इसका उच्चारण नाक और गले दोनों से होता है; जैसे–चाँद, आँगन, आदि इसका चिह्न (ँ) होता है।

अयोगवाह – हिंदी व्याकरण में अनुस्वार (अं) एवं विसर्ग (अः) को 'अयोगवाह' के रूप में जाना जाता है।

व्यंजन वर्ण के तीन भेद होते हैं।

व्यंजन – जिन वर्णो का उच्चारण स्वरों की सहायता से किया जाता है, वे व्यंजन कहलाते हैं।

क	ख	ग	घ	ङ	कवर्ग		
च	छ	ज	झ	ञ	चवर्ग		
ट	ठ	ड	ढ	ण	ड़	ढ़	टवर्ग
त	थ	द	ध	न	तवर्ग		

प	फ	ब	भ	म	पवर्ग
य	र	ल	व		अंत:स्थ
श	ष	स	ह		ऊष्म

व्यंजन		
1. स्पर्श व्यंजन	2. अंतस्थ व्यंजन	3. ऊष्मे व्यंजन

1. स्पर्श व्यंजन – 25
2. अंतस्थ व्यंजन – 4
3. ऊष्म व्यंजन – 4

1. स्पर्श व्यंजन – 'स्पर्श' यानी छूना। जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय फेफड़ों से निकलने वाली वायु कंठ, तालु, मूर्धा, दाँत या ओठों का स्पर्श करती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। क् से लेकर म् तक 25 स्पर्श व्यंजन हैं।

क वर्ग का उच्चारण स्थल कंठ है। ते वर्ग का उच्चारण स्थल दाँत है।

2. अंतस्थ व्यंजन – अंत = मध्य या (बीच, स्थ = स्थित) इन व्यंजनों का उच्चारण स्वर तथा व्यंजन के मध्य का-सा होता है।

(उच्चारण के समय जिह्वा मुख के किसी भाग को स्पर्श नहीं करती) ये चार हैं—य, र, ल, व।